



Hargharpanditji

॥ श्री पद्मिनी एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री पद्मिनी एकादशी व्रत कथा ॥

अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) के शुक्ल पक्ष की पद्मिनी एकादशी अत्यंत दुर्लभ और पुण्यदायिनी मानी जाती है। यह एकादशी केवल अधिक मास में ही आती है। इसका वर्णन स्कन्द पुराण के पुरुषोत्तम माहात्म्य में मिलता है। इस व्रत के प्रभाव से समस्त पापों का नाश होता है, मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा भगवान श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

श्री पद्मिनी एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! अधिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! अधिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी 'पद्मिनी एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत अत्यंत दुर्लभ और महान फल देने वाला है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन समय में हैहय वंश के पराक्रमी राजा कृतवीर्य राज्य करते थे। उनके अनेक रानियाँ थीं, परंतु उन्हें कोई संतान प्राप्त नहीं हुई। संतान न होने के कारण राजा अत्यंत चिंतित रहने लगे।

राजा ने राज्य का भार मंत्रियों को सौंप दिया और अपनी मुख्य रानी पद्मिनी के साथ वन में जाकर कठोर तपस्या करने लगे। उन्होंने हजारों वर्षों तक भगवान श्रीहरि की आराधना की, परंतु फिर भी उन्हें संतान का वरदान प्राप्त नहीं हुआ।

राजा की कठोर तपस्या देखकर भी जब कोई फल नहीं मिला, तब रानी पद्मिनी ने महान पतिव्रता अनसूया माता के आश्रम में जाकर उनसे उपाय

पूछा।

माता अनसूया ने कहा—

"हे देवी! अधिक मास के शुक्ल पक्ष की 'पद्मिनी एकादशी' का श्रद्धा, भक्ति और विधिपूर्वक व्रत करो। भगवान पुरुषोत्तम श्रीविष्णु की आराधना करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।"

रानी पद्मिनी ने माता अनसूया के निर्देशानुसार पूर्ण श्रद्धा, नियम और भक्ति से पद्मिनी एकादशी का व्रत किया। उन्होंने भगवान श्रीहरि विष्णु का पूजन, जप, भजन और रात्रि-जागरण किया।

रानी की निष्काम भक्ति और व्रत से भगवान श्रीविष्णु अत्यंत प्रसन्न हुए और प्रकट होकर बोले—

"हे देवी! मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ। वर माँगो।"

रानी ने हाथ जोड़कर कहा—

"हे प्रभु! मेरे पति को एक तेजस्वी, धर्मात्मा और पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति हो।"

भगवान श्रीविष्णु ने उन्हें वरदान दिया—

"ऐसा ही होगा। तुम्हें एक महान और अद्वितीय पुत्र प्राप्त होगा।"

कुछ समय बाद रानी पद्मिनी ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। वह आगे चलकर कार्तवीर्य अर्जुन (सहस्रबाहु अर्जुन) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह अत्यंत बलशाली, पराक्रमी और यशस्वी राजा बना।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक पद्मिनी एकादशी का व्रत करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं और अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

पद्मिनी एकादशी का महत्व

यह एकादशी केवल अधिक (पुरुषोत्तम) मास में आती है।

इस दिन जप, दान, गीता-पाठ, विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।
यह व्रत समस्त एकादशियों में अत्यंत दुर्लभ और महापुण्यदायी माना गया है।

कथा का संदेश

श्रद्धा, धैर्य और भगवान पर अटूट विश्वास से कठिन से कठिन मनोकामना भी पूर्ण हो सकती है।
व्रत का वास्तविक उद्देश्य आत्मसंयम, भक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पण है।
भगवान श्रीहरि सच्चे भक्त की प्रार्थना अवश्य स्वीकार करते हैं।
अधिक मास में किए गए जप, तप, दान और व्रत का फल अनेक गुना बढ़ जाता है।

पद्मिनी एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु अधिक मास के शुक्ल पक्ष की पद्मिनी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान पुरुषोत्तम श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, जीवन में सुख, समृद्धि, यश और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री पद्मिनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥